'चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी समारोह' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में महामहिम राज्यपाल, श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक–18.04.2017, समय–अपराह्न–04:00, स्थान–बिहार विद्यापीठ, सदाकत आश्रम, पटना)

बिहार विद्यापीठ के अध्यक्ष श्री विजय प्रकाश जी, विद्यापीठ के मंत्रीगण, प्रो॰ डॉ॰ रत्नेश्वर मिश्र जी, डॉ॰ भारती एस॰ कुमार जी, लोकार्पित पुस्तक के लेखक श्री भैरव लाल दास जी, उपस्थित गणमान्य–जन, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!

'चम्पारण–सत्याग्रह–शताब्दी–समारोह' के उपलक्ष्य में विद्यापीठ द्वारा आयोजित इस सारस्वत समारोह में आकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। कारण यह कि यह वही पवित्र स्थल है, जहाँ महात्मा गाँधी बिहार–यात्रा के क्रम में ठहरा करते थे और देशरत्न डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद, श्री ब्रजकिशोर प्रसाद और मौलाना मजहरूल हक स्वतंत्रता–संग्राम में यहीं से देशवासियों को मार्ग–निर्देश दिया करते थे। महात्माजी के 'सविनय–अवज्ञा–आन्दोलन' के दौरान, सरकारी सहायता–प्राप्त विद्यालयों और महाविद्यालयों का परित्याग करने वाले छात्रों की शिक्षा बाधित नहीं हो, इसके लिए ही 1921 ई॰ में इस विद्यापीठ की स्थापना की गई थी। इसकी स्थापना महात्मा गाँधी के द्वारा हुई थी और उन्हीं द्वारा संग्रहित चन्दे की 62 हजार रूपये की राशि से इसका संवर्द्धन हुआ। आचार्य बद्रीनाथ वर्मा, प्रो॰ फूलदेव सहाय वर्मा जैसे दर्जनों ख्यातिप्राप्त शिक्षकों ने अपनी–अपनी सेवा का परित्याग कर निःशुल्क रूप में यहाँ शिक्षक के रूप में अपनी सेवा दी थी। लोकनायक जयप्रकाश नारायण जैसे कई महापुरूषों ने यहीं शिक्षा पाई थी। महात्मा गाँधी द्वारा ही इस विद्यापीठ में मौलाना मजहरूल हक को कुलपति, श्री ब्रजकिशोर प्रसाद को उप कुलपति और देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद को प्रधानाचार्य नियुक्त किया गया था। पर मौलाना साहब और ब्रजकिशोर प्रसाद के देहावसान और देशरत्न

राजेन्द्र प्रसाद के खाद्य मंत्री के रूप में दिल्ली चले जाने के कारण इसका विकास अपेक्षित रूप में नहीं हो पाया। परंतु जैसा कि श्री विजय प्रकाश जी ने बताया कि विद्यापीठ में कौशल विकास केन्द्र, बी॰एड॰ कॉलेज की स्थापना एवं अन्य विभिन्न विकास कार्यक्रम वर्तमान में कार्यान्वित हो रहे हैं। वस्तुतः यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है और इसके लिए मैं विद्यापीठ के अधिकारियों एवं कर्मियों को बधाई देता हूँ।

'बिहार विद्यापीठ' में आपलोगों से यह मेरी दूसरी मुलाकात है। मैं प्रथम बार देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद की '130वीं जयन्ती' के अवसर पर 3 दिसम्बर, 2015 को आया था। आज 'चम्पारण–शताब्दी–समारोह' दूसरा विशिष्ट अवसर है, जब मुझे विद्यापीठ में आने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। 'चम्पारण–सत्याग्रह' और विद्यापीठ का निकट का सम्बन्ध रहा है। 'चम्पारण–सत्याग्रह' के नेतृत्वकर्त्ता एवं सहयोगी प्रायः वही रहे, जो बिहार विद्यापीठ के संस्थापक, संरक्षक और संचालक रहे। इसलिए विद्यापीठ का विशेष दायित्व बनता है कि वह 'चम्पारण–सत्याग्रह–शताब्दी' वर्ष के अवसर पर अपने प्रेरणा–पुरूषों के उद्देश्यों के अनुरूप विकास हेतु कार्य योजना बनावे। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि विद्यापीठ अपने दायित्व के प्रति सजग और क्रियाशील है। 'चम्पारण–सत्याग्रह' के दौरान महात्मा गाँधी ने निलहों की 'तिनकठिया प्रथा' एवं अन्य अत्याचारों से त्रस्त किसानों को मुक्त कराने के साथ चम्पारण निवासियों में व्याप्त अंधविश्वास, विषमता, अशिक्षा आदि को दूर करने तथा स्वच्छ परिवेश सृजित करने के लिए विशेष अभियान चलाया था और लोगों को निर्भीक और आत्मनिर्भर रहने की सलाह दी थी। विद्यापीठ को गाँधीजी के इन निर्देशों को कार्यरूप देने के लिए कृतसंकल्पित होना चाहिए। मुझे बताया गया है कि बिहार विद्यापीठ इस ओर गंभीरतापूर्वक सोच रही है। मैंने अभी श्री भैरव लाल दास

लिखित पुस्तक 'चम्पारण में गाँधी की सृजन यात्रा' का लोकार्पण किया है। मैंने इसे सरसरी तौर पर देखा है। 'चम्पारण–सत्याग्रह' से संबंधित तथ्यों का संग्रह कर लेखक ने पुस्तक को प्रामाणिक रूप देने का सराहनीय प्रयास किया है। इसके लिए मैं लेखक श्री भैरव लाल दास और पुस्तक के प्रकाशक बिहार विद्यापीठ को हार्दिक बधाई देता हूँ। 'चम्पारण–सत्याग्रह' की स्मृति को सँजोए रखने और ऐतिहासिक विरासत को सुरक्षित रखने में ऐसी पुस्तकों की विशेष भूमिका होती है।

मैं महात्मा गाँधी एवं चम्पारण–सत्याग्रह में भाग लेने वाले सभी नेताओं, स्वतंत्रता सेनानियों, किसानों और किसानों के नेता श्री राजकुमार शुक्ल, जिन्होंने महात्मा गाँधी को अथक प्रयास कर चम्पारण आमंत्रित किया था, को नमन करता हूँ। साथ ही देशरत्न डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद, ब्रजकिशोर प्रसाद, मौलाना मजहरूल हक, राम नवमी बाबू, पीर मुहम्मद मूनीस, अनुग्रह बाबू, कृपलानी जी आदि चम्पारण–सत्याग्रह के सभी सेनानियों का पुण्य स्मरण करता हूँ। ऐसे सार्थक आयोजन के लिए श्री विजय प्रकाश जी एवं बिहार विद्यापीठ के सभी अधिकारियों एवं मंत्रियों को मैं शुभकामनाएँ देता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।